

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

वर्ष 11 अंक 1

फरवरी, 2024

Bi-annual

Bi-lingual

A Multi Disciplinary Peer Reviewed (Refereed)
Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.



अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

www.sanskritikpravah.com

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 6000 (15 years)
Individuals (Rajasthan)	-	Rs. 1000 (5 years)	Rs. 2700 (15 years)
(Out of Rajasthan)	-	Rs. 1100 (5 years)	Rs. 3000 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the '**Sanskritik Pravah**' **Research Journal** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

आन्कृतिक प्रवाह

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

E-mail : editor.sprj@gmail.com

: ramsjaipur@gmail.com

website : www.sanskritikpravah.com

Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor)

094600-70031(Editor)

Published by : Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

Printed at : Pinkcity Book Manufactures, Kukas, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

वर्ष 11 अंक 1

फरवरी 2024

अर्द्धवार्षिक

द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए समर्पित एक बहु-विषयात्मक
सहकर्मी समीक्षित (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

website : www.sanskritikpravah.com

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

Sanskritik Pravah Research Journal

Patron

Sh. Ramprasad

Social Worker & Guardian, Akhil Bhartiya
Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur (Raj.)

Editorial Advisory Board

Prof. Alpna Kateja

Vice Chancellor,
University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)

Dr. Kuldeep Chand Agnihotri

Ex Vice Chancellor, Central University of
Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)

Prof. M. L. Chhija

Ex Vice Chancellor,
A.B. Vajpayee
Hindi University, Bhopal (M.P.)

Dr. Bhagwati Prasad Sharma

Ex Vice Chancellor, Gautam Buddha University,
Greater Noida (U.P.)

Prof. J. P. Sharma

Ex Vice Chancellor,
MLS University, Udaipur (Raj.)

Prof. Bhagirath Singh

Ex Vice Chancellor,
Pandit Deen Dayal Upadhyay University,
Sikar (Raj.)

Prof. Vibha Upadhyay

Ex Head, Department of History and
Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur

Dr. Shreerang Godbole

Endocrinologist, Social Worker & Writer,
Pune (Maharashtra)

Managing Editor

Dr. Ram Karan Sharma

Ex Principal & Head,
Deptt. of Law and Management,
NIMS University, Jaipur (Raj.)
H-28, Haldighati Marg,
Jaipur-302018

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal

Ex Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)
72/25, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur-302020
E-mail : ramsjaipur@gmail.com
Mobile : 09414312288

Editor

Dr. Gopal Sharan Gupta

Secretary,
Jan Kalyan Sansthan, Jaipur
E-mail : gsgupta1960@gmail.com
Mobile : 09460070031

Associate Editor

Dr. Jayanti Lal Khandelwal

Assistant Professor,
Apex University, Jaipur (Raj.)
Email : jl1974khandelwal@gmail.com
Mobile : 9314640220

Dr. Indrajeet Bhattacharya

Member, Museum Association of India,
Member, ICOMOS INDIA
Res. : 143, Indira Colony, Bani Park, Jaipur
E-mail : indrajeet201070@gmail.com
Mobile : 9571806910

Editorial Board

Dr. Sunil Asopa

Professor, Deptt. of Law,
J.N.V. University, Jodhpur
61-B, Laxmi Nagar, Jodhpur-324006,
E-mail : sunasopa@gmail.com,
Mobile : 09414294406

Dr. Suraj Rao

Deputy Registrar
MDS University, Ajmer (Raj.)
E-mail : suraj1973@gmail.com
Mobile : 94602 46641

Dr. Pramila Dubey,

Dean, faculty of Education
(University of Rajasthan) , Principal,
SSG Pareek P.G. College of Education, Banipark, Jaipur
Mobile : 09413156597

Dr. Kailash Chand Gurjar

Assistant Professor, Deptt. of History,
M.L.S. University, Udaipur(Raj)
W- 6 , Nehru Hostel, Hiran Magari,
Sector -3, Udaipur-313001
E-mail : kailashchand191977@gmail.com
Mobile : 09929089995

About Contributors of this issue

1. मधुरा गजानन डांगे

शोधार्थी (इतिहास), इंडस विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुजरात)। इनके कई शोध आलेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

2. डॉ. रजनी मीणा

एम.ए. पीएच.डी. शिक्षा प्राप्त। 'राजपूताने के सैनिकों का विदेशी अभियान' विषय पर शोध कार्य, भारतीय संस्कृति की धाराएँ, Economic and Social History of Ancient India, राजपूताने की सेना, ब्रितानी साम्राज्यवाद और वैदेशिक अभियान एवं इम्पीरियल सर्विस टूप नामक पुस्तकों का प्रकाशन। अनेक शोध पत्रिकाओं में शोध पत्रों का प्रकाशन।

सम्प्रति – राजकीय महाविद्यालय, जयपुर के इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग में सह आचार्य।

3. डॉ. सूरज राव

विगत 20 वर्षों से भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास पर शोध कार्य। लगभग 132 शोध पत्र जिसमें 60 शोध पत्र भारतीय और विदेशी प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित। 10 पुस्तकें प्रकाशित। सहायक प्राध्यापक इतिहास, मेवाड़ विश्वविद्यालय।

सम्प्रति – महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर में उप कुल- सचिव के पद पर कार्यरत हैं।।

4. डॉ. हेमन्ध्र सिंह सारंगदेवोत

पुरातत्त्व में स्नातकोत्तर डिप्लोमा तथा मोहन लाल सुखाडिया विश्वविद्यालय से एम.ए. एवं पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। आपकी 5 पुस्तकें और 31 शोध लेख प्रकाशित हैं।

5. तन्मय भट्टाचार्य

महाविद्यालय में सामाजिक विज्ञान समूह में सर्वश्रेष्ठ शोध प्रबंध के पुरस्कार से सम्मानित, हिंदी, बंगाली, अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओं का ज्ञान, ब्राह्मी और शारदा जैसी लिपियों में कुशल।

सम्प्रति : लखनऊ विश्वविद्यालय से 'एआईएच और पुरातत्त्व' में परास्नातक के विद्यार्थी।

6. शांतनु जुगतावत

राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर तथा सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं। राष्ट्रीय विधि संस्थान विश्वविद्यालय, भोपाल से इन्होंने कानून का अध्ययन किया। विधि विषय पर इनके लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। राजस्थान सरकार के वित्त विभाग में स्थायी परामर्श दाता (Standing Counsel) तथा राष्ट्रीय जाँच एजेन्सी (NIA) के विशिष्ट लोक अभियोजक के नाते कार्यरत।

7. सुदीप लाखोटिया

राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर में अधिवक्ता हैं। इन्होंने अपनी विधि की उपाधि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से प्राप्त की है।

8. उमेश कुमार पाठक

वंश लेखक सौरोजी सूकर क्षेत्र के हैं। इनकी प्रकाशित कृति 'तुम बड़े कौतुकी हो' है। 11 कृतियाँ प्रकाशनाधीन हैं। कई राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता की है।

सम्प्रति - 'तुलसी शोध संस्थान' सोरो सूकरक्षेत्र के कार्यकारी निदेशक हैं।

9. डॉ. अशोक कुमार शर्मा

आप केशव विद्यापीठ जामडोली में प्राचार्य रहे हैं। आपको शिक्षण एवं शोध का 40 वर्ष का अनुभव प्राप्त है। आपके 75 शोध पत्र प्रकाशित हैं। आपने 50 पीएच.डी. शोधार्थियों का निर्देशन किया। 3 पुस्तकें भी प्रकाशित हैं।

सम्प्रति - प्रोफेसर एवं शोध समन्वयक, निम्स विश्वविद्यालय, जयपुर में कार्यरत हैं।

10. डॉ. मीनू अग्रवाल

पूर्व समन्वयक, सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर। शिक्षण व शोध अनुभव 26 वर्ष। 8 शोध छात्रों का शोध निर्देशन। आपकी 8 पुस्तकें प्रकाशित हैं। 22 शोध लेख प्रकाशित। मेदनी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित हैं।

11. प्रिया सैनी

एम.ए. इतिहास प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण। एम.फिल. जैन अध्ययन में 2015 में तथा नेट परीक्षा 2014 में उत्तीर्ण की। वर्तमान में शोधार्थी हैं।

12. सुमन देवी शर्मा

एस.एस.जी पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। आपके कई शोध पत्र प्रकाशित हैं।

13. श्रीराम पारीक

एस.एस.जी पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं।

14. सोनू गुप्ता

B.Tech & M.Sc. गणित विषय में किया। वर्तमान में भगवंत विश्वविद्यालय से पीएच.डी. कर रहे हैं। आप अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय में गणित विभाग में हेड एवं सहायक आचार्य हैं।

15. दीक्षा शर्मा

वर्तमान में अग्रवाल महाविद्यालय में गणित की सहायक आचार्य हैं।

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

	पृष्ठ संख्या
संपादकीय ...	8
1. सांस्कृतिक जागरण के समन्वित प्रयास धर्मजागरण समन्वय विभाग, पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत - मधुरा गजानन डांगे	10
2. राष्ट्रीय एकता में धर्म ग्रन्थों की भूमिका - सुमन देवी शर्मा एवं श्रीराम पारीक	19
3. औपनिवेशिक राजपूताना में स्वातंत्र्य समर के नायक : ठाकुर केसरी सिंह बारहठ - डॉ. रजनी मीणा	30
4. अतीत का उज्वल पृष्ठ सिन्धु देश (एक ऐतिहासिक विमर्श) - डॉ. सूरज राव	40
5. मेवाड़ के सारंगदेवोत सिसोदिया गुहिलोत और वंशावली संरक्षण - डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत	49
6. वंश लेखन परम्परा में पण्डे एवं तीर्थ पुरोहित- 'सूकरक्षेत्र सोरो के संदर्भ में' - उमेश कुमार पाठक	53
7. देश के समक्ष उपस्थित चुनौती : आतंकवाद एवं समाधान के प्रयास - प्रिया सैनी	72
8. धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित शिक्षा व्यवस्था - डॉ. अशोक कुमार शर्मा एवं डॉ. मीनू अग्रवाल	83
9. Post Independence threats to India's National Unity - Tanmoy Bhattacharya	107
10. Misuse of Minority Status by Educational Institutions - A Critical Perspective - Shantanu Jugtawat & Sudeep Lakhotia	125
11. Vedic Mathematics - Sonu Gupta & Diksha Sharma	132
● Guidelines for authors	140
● Review & Publication Policy, Ethics Policy	143
● शोध पत्र हेतु मुख्य विषय	144

संपादकीय

ईसाइयत से मोह भंग

भारत में ईसाई मिशनरी प्रलोभन, धोखे या अन्य प्रकार से हिंदुओं को मतांतरित कर ईसाई बनाने के कार्य में लम्बे समय से सक्रिय हैं। परन्तु यहाँ कार्यरत ईसाई पादरी जिन देशों से आते हैं, उनके अपने देशों में ईसाइयत से मोह भंग होने के समाचार हैं। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि यूरोपीय देशों तथा आस्ट्रेलिया व अमेरिका जैसे अब तक ईसाई बहुल माने जाने वाले देशों की आबादी में ईसाइयों का प्रतिशत तेजी से कम होता जा रहा है।

आस्ट्रेलिया में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जहाँ 61 प्रतिशत ईसाई थे वहीं वर्ष 2021 की जनगणना में उनका प्रतिशत घटकर मात्र 43.9 प्रतिशत रह गया। वहाँ जनगणना के दौरान 'No religion' अर्थात् 'कोई धर्म नहीं' लिखवाने वालों की संख्या बढ़ रही है। 2011 में आस्ट्रेलिया की आबादी के 22.3 प्रतिशत ने अपना धर्म 'No religion' लिखवाया था, जबकि 2021 की जनगणना में इनका आबादी में प्रतिशत बढ़कर 38.9 हो गया। यह वृद्धि लगभग उतनी ही है जितनी आबादी में ईसाइयों के प्रतिशत में कमी आई। वहाँ बहुत बड़ी संख्या में ऐसे ईसाई हैं जिन्होंने चर्च जाना छोड़ दिया है।

छोड़ रहे हैं चर्च जाना

पश्चिमी यूरोप के अधिकांश व्यस्क कहते हैं कि उनका बपतिस्मा (ईसाई होने के लिए आवश्यक धार्मिक रस्म) हुआ था, परन्तु इनमें से बहुत से लोग अब अपने को ईसाई नहीं मानते। अमेरिकी संस्था प्यू रिसर्च सेंटर के सर्वेक्षण के अनुसार इन लोगों का कहना है कि वे धीरे-धीरे धर्म से दूर हो गए तथा ईसाई धार्मिक शिक्षाओं और निर्देशों में विश्वास करना बंद कर दिया है। यद्यपि इनमें से बहुत से अभी भी अपने को ईसाई मानते हैं भले ही वे चर्च नहीं जाते हों या बहुत कम जाते हों।

इटली को छोड़कर पश्चिमी यूरोप के शेष देशों में चर्च न जाने वाले ईसाइयों की संख्या उन लोगों की तुलना में ज्यादा है जो चर्च जाते हैं। चर्च न जाने वाले ईसाइयों को Non Practising Christians (गैर अभ्यासी ईसाई) कहा जा सकता है। यूके में ऐसे गैर अभ्यासी ईसाइयों की संख्या वहाँ की आबादी में 55 प्रतिशत है जबकि मात्र 18 प्रतिशत ईसाई चर्च जाते हैं। अर्थात् चर्च जाने वालों से तीन गुणा ज्यादा ऐसे ईसाई हैं जो चर्च नहीं जाते। बड़ी संख्या में ईसाई अपने को Atheist (नास्तिक) या Agnostic (अज्ञेयवादी-संशयवादी) या धर्म से असंबद्ध (of no religion) कहने लगे हैं।

2021 में हुए एक फ्रांसीसी सर्वेक्षण से पता चला है कि आधे से ज्यादा फ्रांसीसी नागरिक GOD (ईश्वर) में विश्वास नहीं करते या ईसाई रितीजन को अप्रासंगिक मानते हैं। कैथोलिक ईसाई के रूप में पहचाने जाने वाले लोगों की संख्या फ्रांस में वर्ष 1986में 81 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2020 में 47 प्रतिशत हो गई। इसी अवधि में वहाँ गैर धार्मिक लोगों की आबादी 16प्रतिशत से बढ़कर 40 प्रतिशत हो गई।

जर्मनी में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट, दोनों प्रकार के चर्चों में ईसाइयों की उपस्थिति और सदस्यता कई दशकों से लगातार घट रही है। 2021 के आते-आते इस देश के इतिहास में पहली बार आधे से भी कम जर्मन नागरिक किसी चर्च से जुड़े हुए थे।

अमेरिका में ईसाई बहुसंख्यक आबादी पिछले कई दशकों से निरंतर कम होती जा रही है। प्यू रिसर्च सेंटर के अध्ययनों से पता चलता है कि वर्ष 2020 तक लगभग 64 प्रतिशत अमेरिकी स्वयं को ईसाई मानते थे जबकि पचास वर्ष

पूर्व यह संख्या 90 प्रतिशत से भी ज्यादा थी।

अमेरिका का ईसाई बहुमत लगातार सिकुड़ता जा रहा है। यदि यही प्रवृत्ति जारी रही तो प्यू रिसर्च के अनुसार कुछ ही दशकों में ईसाई अमेरिका में अल्पसंख्यक हो सकते हैं।

भारत में मतांतरण के कारण अराजकता व राष्ट्र विरोधी गतिविधियाँ

एक ओर जहाँ अमेरिका, आस्ट्रेलिया और यूरोप देशों में ईसाइयत से मोह भंग होता दिख रहा है, ईसाई मिशनरी उसे रोक पाने में असफल हो रही हैं, वहीं दूसरी ओर मिशनरी अफ्रीका एवं एशिया में अपना पूरा जोर मतांतरण पर लगा रही हैं। भारत में मिशनरी आरंभ में हिंदू धर्म के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न करने का प्रयास करती हैं। इसके बाद समुदाय विशेष को हिंदू धर्म से अलग पहचान बनाने के लिए उकसाती हैं तथा उन्हें अपने ही लोगों से विद्रोही बना देती हैं। इस प्रकार से समाज में अराजकता व अव्यवस्था का निर्माण कर राष्ट्र की प्रगति को भी बाधित करती हैं। राजस्थान में 'आदिवासी हिंदू नहीं' आंदोलन के पीछे ईसाई मिशनरी ही बताये जा रहे हैं, जबकि सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 के अंतर्गत आदिवासियों को जनजाति से संबोधित कर हिंदू धर्म में शामिल माना गया है।

भारत के कई क्षेत्रों में 'क्रिस्टो क्रिश्चियन्स' की संख्या में बढ़ोत्तरी होने के समाचार हैं। यानी, एक व्यक्ति चर्च के दुष्प्रभाव में आकर ईसाई बन रहा है, परंतु सार्वजनिक रूप से वह अपनी पहचान 'हिंदू' के रूप में बताए रखता है और अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति को मिलने वाले आरक्षण व अन्य सुविधाओं/लाभों का फायदा हिंदू के रूप में भी ले रहा है। क्या यह पूरी तरह अनैतिक नहीं है?

बदलता वैश्विक परिदृश्य

वर्तमान में ईसाई रिलीजन को मानने वालों की संख्या विश्व में अन्य रिलीजन/धर्मों की तुलना में सबसे ज्यादा है। परंतु इस्लाम तेजी से बढ़ने वाला रिलीजन है। प्यू रिसर्च सेंटर के अनुसार वर्ष 2010 में विश्व की जनसंख्या में ईसाइयों की भागीदारी 31.4 प्रतिशत थी जिसके वर्ष 2050 में भी इतनी ही अर्थात् 31.4 प्रतिशत ही रहने की संभावना है। परंतु जो मुस्लिम आबादी 2010 में विश्व की 23.2 प्रतिशत थी वह 73 प्रतिशत की भारी वृद्धि के साथ वर्ष 2050 में विश्व की कुल आबादी का 29.7 प्रतिशत होने का अनुमान है। जहाँ तक अन्य धर्मों का प्रश्न है, 2010 में विश्व में 15 प्रतिशत हिन्दू तथा 7.1 प्रतिशत बौद्ध थे जो 2050 में घटकर विश्व की कुल आबादी का 14.9 प्रतिशत एवं 5.2 प्रतिशत रह जाएंगे, ऐसी संभावना है। प्यू रिसर्च का अनुमान है कि जो मुस्लिम आबादी 2010 में विश्व की एक चौथाई थी और विश्व में ईसाई आबादी के पश्चात् दूसरे नम्बर पर थी वह 2070 तक विश्व में सबसे ज्यादा होगी तथा ईसाइयों को पीछे छोड़ देगी।

पॉपुलेशन रेफरेंस ब्यूरो (पीआरबी) के एक अध्ययन के अनुसार विश्व में मुस्लिम आबादी तेजी से बढ़ने के पीछे एक बड़ा कारण मुस्लिम महिलाओं की प्रजनन दर (टीएफआर) अन्य धर्मों की महिलाओं की प्रजनन दर से ज्यादा होना है। विभिन्न धर्मों की महिलाओं की तुलनात्मक प्रजनन दर इस प्रकार है- मुस्लिम : 3.1, ईसाई : 2.7 तथा हिन्दू : 2.4 है, जबकि विश्व में महिलाओं की औसत प्रजनन दर 2.5 है। चूंकि पहले मुस्लिम महिलाओं की प्रजनन दर कहीं ज्यादा थी, ऐसे में तब जो बच्चे पैदा हुए थे अब उनमें से ज्यादातर नौजवान हैं और शादी की उम्र वाले हो गए हैं, इस कारण से भी मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या बढ़ेगी ऐसा माना जा रहा है।

विचार करना होगा कि विश्व में ईसाई माने जाने वाले देशों के नागरिकों का ईसाइयत से मोह भंग होने के क्या परिणाम होने वाले हैं? 2050-70 के संभावित परिदृश्य का विश्व के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ताने-बाने पर क्या प्रभाव पड़ने वाला है? इस पर चर्चा-विचार विमर्श होना चाहिए। क्या विश्व धार्मिक कट्टरता की ओर बढ़ रहा है? क्या ऐसी शक्तियाँ हावी होंगी जिनका लोकतंत्र में विश्वास नहीं है?

- रामस्वरूप अग्रवाल

Guideline For Authors

1. Articles should be submitted through e-mail us at editor.sprj@gmail.com or ramsjaipur@gmail.com
A hard copy of the same must be sent by post or by hand.
2. The manuscript should be typed in Page Maker or M.S. Word on A4 size paper. For Hindi, use 14 point font size for text, 25 point size for main heading and 15 point font size for sub headings. For English, use 12 point font size for text, 24 point size for main heading and 13 point font size for sub headings. For English, use Times New Roman Font and for Hindi, Devlys 010 or Chanakya Font.
3. All references should be given at the end of the article.
4. For the Citation and References, Guidelines specified in the Publication Manual of the American Psychological Association (6th edition, 2009) must be followed.
5. All acknowledgements if any, should be given at the end of the article and before the references.
6. Care should be taken to avoid spelling error & grammatical mistakes.
7. If 'Slokas' from Sanskrit text are referred in any article, please give their Hindi translation also.
8. The article / research paper shall be published subject to recommendation of referees.
9. Author should furnish their short introduction, mailing address, e-mail and phone / mobile numbers.

Detailed Submission Guideline

1. Manuscript:

The manuscript should be structured as follows:

- Cover page, showing title of the paper, name of author, author's affiliation and institutional address with pin code, email id and a 200–250 word abstract.
- Authors' names and references should not be used in the text in order to keep authors' anonymity (e.g., 'as the author has written elsewhere' should be avoided). In case there are two or more authors, then corresponding author's name and address details must be clearly specified on the first page itself.
- The contributors should also provide 4–5 keywords for online search.
- Text should start on a new page, and must not contain the names of authors.
- References should come at the end of the manuscript.
- Tables and figures should be provided in editable format and should be referred to in the text by number separately (e.g., Table 1) not by placement (e.g., see Table below). They should each be submitted on a separate page following the article, numbered and arranged as per their references in the text. They will be inserted in the final text as indicated by the author. Source citations with tables and figures are required irrespective of whether or not they require permissions.
- Figures, including maps, graphs and drawings, should not be larger than page size. They should be numbered and arranged as per their references in the text. All photographs and scanned images should have a resolution of minimum 300 dpi and 1500 pixels and their format should be TIFF or JPEG. Permissions to reprint should be obtained for copyright protected photographs/images. Even for photographs/images available in the public domain, it should be clearly ascertained whether or not their reproduction requires permission for purposes of publishing. All photographs/scanned images should be provided separately in a folder along with the main article.
- Mathematical formulae, methodological details etc. should be given separately as an appendix, unless their mention in the main body of the text becomes essential.

2. Language

- a. The language and spellings used should be British (U.K.), with 's' variant, e.g., globalisation instead of globalization, labour instead of labor. For non-English and uncommon words and phrases, use italics only for the first time. Meaning of non-English words should be given in parenthesis just after the word when it is used for the first time.
- b. Articles should use non-sexist and non-racist language.
- c. Spell out numbers from one to ninety nine, 100 and above to remain in figures. However, for exact measurement (e.g., *China's GDP growth rate 9.8 per cent*) use numbers. Very large round numbers, especially sums of money, may be expressed by a mixture of numerals and spelled-out numbers (*India's population 1.2 billion*).
- d. Single quotes should be used throughout. Double quote marks are to be used within single quotes. Spellings of words in quotations should not be changed. Quotations of 45 words or more should be separated from the text.
- e. Notes should be numbered serially and presented at the end of the article. Notes must contain more than a mere reference.
- f. Use 'per cent' instead of % in the text. In tables, graphs etc, % can be used. Use '20th century', '1990s'.
- g. Only the first word of title and subtitle should start with capitals. Although proper names are capitalised, many words derived from or associated with proper names, as well as the names of significant offices are lowercased. While the names of ethnic, religious and national groups are capitalised (*the Muslims, the Gurkhas, the Germans*), designations based loosely on colour (*black people*) and terms denoting socio-economic classes or groups (*the middle class, the dalits, the adivasis, the african-american*) are lowercased. All caste, tribe and community names (*the Santhals, the Jatavs*) are to be capitalised but generic terms (*the kayasths*) are to be lower cased. Civil, military, religious, and professional titles (*the president*) and institutions (*the parliament, the united nations*) are to be put in lower case, but names of organisations (*the Labour Party, the Students Federation of India*) are to be capitalised. The names of political tendencies (*the marxists, the socialists*) should remain in lower case.
- h. Abbreviations are spelled out at first occurrence. Very common ones (*US, GDP, BBC*) need not be spelled out. Other commonly used abbreviations (*am, pm, cm, kg, ha*) can be used in lower case, without spaces.

3. Citations and References

Guidelines specified in the *Publication Manual of the American Psychological Association* (6th edition, 2009) must be followed.

References:

- A consolidated listing of all books, articles, essays, theses and documents referred to (including any referred to in the tables, graphs and maps) should be provided at the end of the article.
- Arrangement of references: Reference list entries should be alphabetized by the last name of the first author of each work. In each reference, authors' names are inverted (last name first) for all authors (first, second or subsequent ones); give the last name and initials for all authors of a particular work unless the work has more than six authors.
- If the work has more than six authors, list the first six authors and then use et al. after the sixth author's name.
- Chronological listing: If more than one work by the same author(s) is cited, they should be listed in order by the year of publication, starting with the earliest.
- Sentence case: In references, sentence case (only the first word and any proper noun are capitalized – e.g., 'The software industry in India') is to be followed for the titles of papers,

- books, articles, etc.
- Title case: In references, Journal titles are put in title case (first letter of all words except articles and conjunctions are capitalized – e.g., Journal of Business Ethics).
- Italicize: Book and Journal titles are to be italicized.

Some examples are given below:

In-text citations:

- One work by one author: (Kessler, 2003, p. 50) or 'Kessler (2003) found that among the epidemiological samples...'
- One work by two authors: (Joreskog & Sorborn, 2007, pp. 50–66) or Joreskog and Sorborn (2007) found that..
- One work by three or more authors: (Basu, Banerji & Chatterjee, 2007) [first instance]; Basu et al. (2007) [Second instance onwards].
- Groups or organizations or universities: (University of Rajasthan, 2007) or University of Rajasthan (2007).
- Authors with same surname: Include the initials in all the in-text citations even if the year of publication differs, e.g., (I. Light, 2006; M.A. Light, 2008)
- Works with no identified author or anonymous author: Cite the first few words of the reference entry (title) and then the year, e.g., ('Study finds', 2007); (Anonymous, 1998).
- If abbreviations are provided, then the style to be followed is: (National Institute of Mental Health [NIMH], 2003) in the first citation and (NIMH, 2003) in subsequent citations.
- Two or more works by same author: (Gogel, 1990, 2006, in press)
- Two or more works with different authors: (Gogel, 1996; Miller, 1999)
- Secondary sources: Allport's diary (as cited in Nicholson, 2003).
- Films: (Name of the Director, Year of release)

References:

Books: Patnaik, U. (2007). *The republic of hunger*. New Delhi: Three Essays Collective.

Edited Books: Amanor, K. S., & Moyo, S. (Eds.) (2008). *Land and sustainable development in Africa*. London/New York: Zed Books.

Translated books: Amin, S. (1976). *Unequal development* (trans. B. Pearce). London and New York: Monthly Review Press.

Book chapters: Chachra, S. (2011). *The national question in India*. In S. Moyo and P. Yeros (Eds), *Reclaiming the nation* (pp. 67–78). London and New York: Pluto Press.

Journal articles: Foster, J. B. (2010). The financialization of accumulation. *Monthly Review*, 62(5), 1-17.

Newsletter article, no author: Six sites meet for comprehensive anti-gang initiative conference. (2006, November / December). *OOJDP News @ a Glance*. Retrieved from <http://www.ncrjs.gov/html>

[Please do not place a period at the end of an online reference.]

Newspaper article: Schwartz, J. (1993, September 30). Obesity affects economic, social status. *The Washington Post*, pp. A1, A4.

In-press article: Briscoe, R. (in press). Egocentric spatial representation in action and perception. *Philosophy and Phenomenological Research*. Retrieved from <http://cogprints.org/5780/1/ECSRAP.F07.pdf>

Non-English reference book, title translated into English: Real Academia Espanola. (2001). *Diccionario de la lengua espanola* [Dictionary of the Spanish Language] (22nd ed.). Madrid, Spain: Author.

Special issue or section in a journal: Haney, C., & Wiener, R. L. (Eds.) (2004). Capital punishment in the United States [Special Issue]. *Psychology, Public Policy, and Law*, 10(4), 1-17.

Review & Publication Policy

1. There is a board of eminent scholars of various discipline to review the quality of research articles. Articles received for publication are sent to these reviewers. They go through and evaluate the articles. All traces of author's identity are removed from the article before it is sent to the reviewer.
2. Only original and unpublished articles are accepted for publication fulfilling norms of research methodology.
3. We do not accept any charges for submission and publication of articles.
4. It is a multidisciplinary journal dedicated to Socio-Cultural Harmony. Thus, articles for publication are preferred on any subject mentioned in the Thrust Area (See at page no. 102).
5. The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and do not necessarily represent the views of the editor. The 'Sanskritik Pravah' accepts no responsibility for them.
6. The submitting author shall be informed about the selection of the article by e-mail only. Articles not accepted for publication will not be returned to the authors.
7. The article must be accompanied with an understanding that the same has not been published elsewhere and is not under review by another publication.
8. The article shall be published subject to recommendation of referees.

Ethics Policy

1. Fabrication or falsification of data with the intent to mislead is unethical as is the theft & copy of contents from others.
2. Research papers are accepted on the understanding that their contents are original and unpublished and not submitted for publication anywhere else. A certificate to this effect should accompany with the article.
3. Reproducing text from other papers without properly crediting the source is not acceptable. Authors should acknowledge the work of others used in their research and cite their publications.
4. Articles should not contain any material that is unlawful or defamatory.
5. Articles should use non-sexist and non-racist language.
6. All those who have made a significant contribution should be cited as authors. Other individuals who have contributed to the work should be acknowledged.
7. The submitting author is responsible for ensuring that the article's publication has been approved by all the other co-authors.
8. The submitting author should ensure :
 - That the work has not been published before (except in the form of an abstract or as part of a published lecture, review or thesis).
 - That the work is not under consideration elsewhere.
 - That the copyright has not been breached in seeking its publications.
 - That the publication has been approved by responsible authorities at the institute or organisation where the work has been carried out.

‘सांस्कृतिक-प्रवाह’ शोध पत्रिका में प्रकाशन हेतु निम्नलिखित विषयों एवं इनके अनुसांगिक विषयों पर शोध-पत्र आमंत्रित हैं। (उपबिन्दु मुख्य विषयों को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणार्थ ही हैं।)

1. सामाजिक समरसता

- सामाजिक समरसता की अवधारणा, आवश्यकता, महत्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा।
- सामाजिक समरसता को प्रभावित करने वाले कारक, सामाजिक समरसता के अग्रदूत संत/महापुरुष/समाज सुधारक, सामाजिक समरसता के लिए वर्तमान में कार्यरत संस्थाएँ
- समाज को जोड़ने वाले तत्व (यथा मातृभूमि के प्रति समान भाव, सांस्कृतिक एकता के तत्व, समान पूर्वज व समान विरासत, समाज के विभिन्न वर्गों में परस्पर स्नेह व्यवहार इत्यादि)
- धर्मग्रंथों/संतों की वाणी में सामाजिक समरसता
- सामाजिक समरसता एवं मीडिया/राजनैतिक नेतृत्व
- जातिवादी राजनीति एवं सामाजिक समरसता
- सामाजिक समरसता को बढ़ाने वाले त्यौहार, मेले एवं तीर्थ स्थल

2. राष्ट्रीय एकता

- अर्थ, अवधारणा, आवश्यकता, महत्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा
- प्राचीन भारतीय वाङ्मय में राष्ट्रीय एकता के तत्व
- राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत/संत/महापुरुष
- राष्ट्रीय एकता बनाम मीडिया/राजनैतिक नेतृत्व
- धर्म ग्रन्थ/ संत वाणी में राष्ट्रीय एकता के तत्व
- देश विभाजन के कारक एवं वर्तमान स्थिति
- संविधान के प्रावधान व न्यायिक निर्णय

3. सांस्कृतिक चेतना

- अवधारणा, आवश्यकता, महत्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा
- विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन
- सांस्कृतिक चेतना में विभिन्न संत/महापुरुषों का योगदान
- विभिन्न तीर्थ स्थल, त्यौहार, मेले, लोक देवताओं की भूमिका

4. विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों का उद्गम, इतिहास, विविध शाखाएँ, समानताएँ

- जातियों के लोक देवता, वीर पुरुष, तीर्थ स्थल, वंश लेखक
- मतांतरण (Conversion) का प्रभाव

5. लोकदेवता व एकाधिक पंथों/जातियों में उनकी मान्यता

6. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक अवधारणा

- विश्व तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य
- मानवाधिकार/सामाजिक समरसता के सन्दर्भ में अल्पसंख्यक अवधारणा व अधिकार
- बहुपंथिक एवं जाति आधारित समाज में अल्पसंख्यक अवधारणा का औचित्य
- अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक सन्दर्भ में जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) परिवर्तन व प्रभाव
- जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) परिवर्तन एवं पूर्वोत्तर भारत
- पंथनिरपेक्षता बनाम अल्पसंख्यकवाद
- संबंधित संवैधानिक व विधिक प्रावधान तथा न्यायिक निर्णय
- समानता का अधिकार बनाम अल्पसंख्यक प्रावधान

7. धार्मिक सहिष्णुता/सर्वधर्म समभाव

- हिन्दू/ईसाई/इस्लाम का एक दूसरे के प्रति व अन्य पंथों के प्रति दृष्टिकोण

- स्त्री, विवाह, परिवार नियोजन, पर्यावरण आदि पर विभिन्न मजहबों की अवधारणा/विचार
 - विभिन्न पंथ/मजहबों के समान रीति-रिवाज, व्यवहार
 - चर्च का अंतर-पंथ संवाद (Interfaith Dialogue)
- 8. पंथनिरपेक्षता (Secularism)**
- आशय, अवधारणा
 - उद्गम, इतिहास, भारत एवं विश्व परिप्रेक्ष्य
 - पंथनिरपेक्षता बनाम सर्वधर्म समभाव
 - पंथनिरपेक्षता के तत्व, संवैधानिक व वैधानिक स्थिति, न्यायिक निर्णय
 - भारतीय समाज व पंथनिरपेक्षता
- 9. जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) असंतुलन (सन्दर्भ-विभिन्न मजहब/अल्पसंख्यक -बहुसंख्यक समाज)**
- धार्मिक जनसंख्या असंतुलन के कारण व प्रभाव
 - ऐतिहासिक परिणाम, वर्तमान स्थिति, प्रभाव
 - सामाजिक समरसता व जनांकिकीय असंतुलन
 - घुसपैठ एवं जनांकिकीय असंतुलन
- 10. वंशावली संरक्षण, संवर्द्धन एवं संवहन**
- वंशावली का महत्व, ऐतिहासिकता, प्रमाणिकता, स्वीकार्यता, न्यायालयों में साक्ष्य महत्व
 - वंशावली लेखक समाज, राष्ट्रीय एकता एवं समरसता में योगदान, मतांतरित जातियों की वंशावलियाँ
 - वंश-लेखक परम्परा
 - वंशावली बहियों का संरक्षण, वंशावली लेखन की प्रविधियाँ
- 11. मतांतरण (Conversion -सामान्य प्रचलित शब्द धर्मांतरण)**
- औचित्य, संवैधानिक पक्ष, न्यायालय निर्णय
 - भारतीय एवं वैश्विक पक्ष
 - मतांतरण का अधिकार व सीमा (मतांतरित होने व मतांतरित करने/कराने का अधिकार)
 - मतांतरण से सामाजिक समरसता पर प्रभाव
 - मतांतरण व विदेशी शक्तियाँ, मतांतरण के राजनैतिक अर्थ
- मतांतरण व मीडिया/राजनैतिक दल
 - मतांतरण के सन्दर्भ में राज्य की भूमिका व दायित्व
 - मतांतरित को आरक्षण व अन्य सुविधाओं का औचित्य
 - मतांतरित जाति/समुदाय एवं पूर्व जाति/समुदाय के मध्य समन्वय के कारक
 - मतांतरण व व्यक्तिगत विधि
 - मतांतरण के बारे में विभिन्न धार्मिक समूहों की अवधारणा
- 12. परावर्तन (Reconversion)**
- संवैधानिक स्थिति एवं न्यायिक निर्णय
 - आरक्षण व अन्य सुविधाओं की उपलब्धता
 - धर्मशास्त्रीय आधार
 - ऐतिहासिक पक्ष
- 13. प्रकृतिपूजक समाज**
- विश्व के विभिन्न प्रकृति पूजक समाज, उनकी ऐतिहासिकता, जनसंख्यात्मक पक्ष, वर्तमान स्थिति, रीति रिवाज, त्यौहार, भारत से संबंध आदि
 - भारतीय संस्कृति का विश्व प्रसार
- 14. जनजातीय समाज (Tribes)**
- विभिन्न जनजातियों के रीति रिवाज, धार्मिक मान्यता, लोक विश्वास, लोकाचार, लोक देवता, मतांतरण (Conversion) का प्रभाव, आरक्षण स्थिति, संवैधानिक प्रावधान एवं न्यायिक निर्णय
- 15. देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ**
- आतंकवाद, अलगाववाद, प्रादेशिकता, नक्सलवाद, घुसपैठ, सांस्कृतिक आक्रमण, आर्थिक साम्राज्यवाद, जातिवाद, अस्पृश्यता, जनसंख्या असंतुलन, मतांतरण आदि
 - समाधान के प्रयास
- 16. भारतीय सांस्कृतिक सामंजस्य के उभरते प्रतिमान**
- 17. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का सातत्य**
- 18. सर्वसमन्वयात्मक भारतीय पञ्चा (आत्मसातीकरण, भारतीयकरण)**
- 19. विश्व के विभिन्न मत, पंथ, मजहब, धर्म**
- 20. कुटुम्ब प्रबंधन**
- 21. घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु तथा विमुक्त जाति-जनजाति**

संस्थान के प्रमुख प्रकाशन

अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य -

1. आत्मसातीकरण का पुण्य प्रवाह
लेखक - डॉ. कृष्ण गोपाल
पृष्ठ संख्या 24, मूल्य रु. 10/-
2. इस्लाम का अंतर-दर्शन
लेखक - डॉ. श्रीरंग अरविन्द गोडबोले
पृष्ठ संख्या 256, मूल्य रु. 200/-
3. धर्म प्रचार का अधिकार : भ्रातियाँ एवं निवारण
- संविधान सभा में हुई बहस के संदर्भ में
लेखक - रामस्वरूप अग्रवाल
पृष्ठ संख्या 32, मूल्य रु. 20/-
4. अतीत से साक्षात्कार
सम्पादक - रामप्रसाद
पृष्ठ संख्या 80, मूल्य रु. 100/-
5. मतांतरण : चुनौतियाँ एवं विधिक समाधान
लेखक - रामप्रसाद एवं रामस्वरूप अग्रवाल
पृष्ठ संख्या 84, मूल्य रु. 40/-
6. ईसाईयत सिद्धान्त एवं स्वरूप
लेखक - डॉ. श्रीरंग गोडबोले
पृष्ठ संख्या 304, मूल्य रु. 300/-
7. इतिहास में गुर्जर समाज-पुनरावलोकन (स्मारिका)
सम्पादक - डॉ. गोपाल शरण गुप्ता
एवं डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर
पृष्ठ संख्या 144, मूल्य रु. 100/-
8. शुद्धि आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास
लेखक - डॉ. श्रीरंग गोडबोले
पृष्ठ संख्या 80, मूल्य रु. 40/-
9. धर्मजागरण समन्वय के पुरोधा
मुकुन्द आत्माराम पणशीकर
सम्पादक - डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 280, मूल्य रु. 200/-
10. साधु स्वाध्याय संगम
पृष्ठ संख्या 144, मूल्य रु. 75/-

सहयोगी प्रकाशन

1. अ.भा. वंशलेखक दिग्दर्शिका
सम्पादक - डॉ. सुनील आसोपा, डॉ. सुखदेव
राव, डॉ. सूरज राव तथा डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 446, मूल्य रु. 200/-
2. संविधान में धर्म स्वातंत्र्य का अधिकार,
सिद्धांत, व्यवहार एवं चुनौतियाँ
लेखक - डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री
पृष्ठ संख्या 200, मूल्य रु. 200/-
3. सांस्कृतिक प्रवाह (जनांकिकी विशेषांक)
मुख्य सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान
पृष्ठ संख्या 192, मूल्य रु. 200/-
4. वैदिक ऋषि परम्परा एवं वंशावलियाँ
सम्पादक - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
एवं डॉ. विनोद कुमार शर्मा
पृष्ठ संख्या 200, मूल्य रु. 150/-

उपरोक्त पुस्तकों को क्रय करने हेतु सम्पर्क करें-

प्रकाशन विभाग

अ.भा.संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

सम्पर्क : 0141-2973369 (का.) 9414312288 e-mail : editor.sprj@gmail.com



ISSN 2348-2796

Sanskritik Pravah

(A multi disciplinary refereed research journal dedicated to socio-cultural harmony)

B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

e-mail : editor.sprj@gmail.com website : www.sanskritikpravah.com

Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor) 094600-70031(Editor)

Membership Form

1. For Institutions & Individuals :

Name:

Office Address :

Email :

Contact No. : Mobile :

2. For Individuals Only :

Academic Qualification : Post Held

Postal Address :

3. Mode of Payment (Please Tick ✓)

A. Cheque / D.D. No. Date :

(Payble to "Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvay Sansthan")

B. Deposited in SBI A/c. No : 38940233966 (Branch : Indira Bazar, Jaipur)

C. Cash/ UPI by Paytm, Bhim, Google Pay Etc.

A/C Name & No . (above) IFSC : SBIN0031403

D. Pay by Paytm, Bhim etc direct to Mobile : 9414312288

(After Payment, please inform Chief Editor or Editor)

Date :

Signature

Subscription Rates (Please Tick ✓)

Individuals		Institutions	
5 years	Life Time (15 years)	5 Years	Life Time (15 years)
(Rajasthan) ₹ 1000	₹ 2700	₹ 2200	₹ 6000
(Out of Rajasthan) ₹ 1100	₹ 3000	₹ 2200	₹ 6000

For Office Purpose :

Receipt No. Date

Cheque/ D.D./ Bank Deposit/ Cash/ Paytm/ Google Pay (₹.....)

Signature

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)
(सामाजिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र)

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही देश के विभिन्न क्षेत्रों की भाषा, वेश-भूषा, खानपान, रीति-रिवाज, त्यौहार आदि भिन्न-भिन्न होते हुए भी सांस्कृतिक जीवन दर्शन की अन्तर्धारा एक ही बनी रही। सभी उपासना पद्धतियाँ या मजहब न केवल एक दूसरे के प्रति सहिष्णु रहे बल्कि सहअस्तित्व की भावना रखते हुए एक दूसरे का सम्मान भी करते रहे। भारतीय संस्कृति की इस धारा को अक्षुण्ण बनाये रखना आज की आधारभूत आवश्यकता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान के सामाजिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र की स्थापना की गई है।

संस्थान द्वारा सामाजिक समरसता व अन्य संबंधित विषयों पर सेमिनार, कार्यशालाएँ आदि आयोजित की जाती हैं। अनेक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ ही यह शोध पत्रिका 'सांस्कृतिक प्रवाह' भी इसी संस्थान द्वारा प्रकाशित की जा रही है।